

Shane Gause Aazam (Hindi)

हफ्तावार रिमाला : 328

Weekly Booklet : 328

अमीरे अहले सुन्नत رحمة الله عليه के रबीउल आखिर 1441
हिजरी मुताबिक दिसम्बर 2019 को मदनी मर्कज फैजाने
मदीना में मदनी मुजाकरे से कबूल होने वाले बयान का तहरीरी
गुलदस्ता, (मअ तरमीम व इजाफ़ा) बनाम

मज़ारे ग़ौसे رحمة الله عليه

शाने رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ग़ौसे आ'ज़म

अल्लाह पाक के नज़ीक होने का वज़ीफ़ा

01

सोशल मीडिया की एक पोस्ट

08

वस्वसा और उस का जवाब

08

70 हज़ार का इज्तिमाअ

15

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दावते इस्लामी)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ شَانे गौसे आ 'जम

अल्लाह पाक के नज़दीक होने का वज़ीफ़ा

अल्लाह पाक ने हज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام पर वही नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा ! क्या तुम चाहते हो कि जिस क़दर तुम्हारा कलाम तुम्हारी ज़बान के, तुम्हारे खयालात तुम्हारे दिल के, तुम्हारी रूह तुम्हारे बदन के, तुम्हारी बीनाई का नूर तुम्हारी आंख के करीब है, मैं उस से भी ज़ियादा तुम्हारे करीब हो जाऊं ? अर्ज़ किया : हां ! फ़रमाया : फिर मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुरूद भेजो ।

(حلیة الاولیاء، 6/33، رقم: 7716- مطالع المسرات (اردو)، ص 69)

नूहो ख़लीलो मूसा व ईसा	सब का है आका नामे मुहम्मद
पाई मुरादे दोनों जहां में	जिस ने पुकारा नामे मुहम्मद
दोनों जहां में दुन्या व दीं में	है इक वसीला नामे मुहम्मद
रखवो लहद में जिस दम अज़ीज़ो	मुझ को सुनाना नामे मुहम्मद
रोज़े क़ियामत मीज़ानो पुल पर	देगा सहारा नामे मुहम्मद

(कबालए बख़्शिश, स. 134)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

शैतान को पहचान लिया

शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के शहज़ादे गिरामी हज़रते शैख़ अबू नस्स मूसा बिन शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ

फ़रमाते हैं : मेरे वालिद (या'नी गौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ) ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अपने एक सफ़र में सह़रा की तरफ़ निकला और चन्द दिन वहां ठहरा मगर मुझे पानी नहीं मिलता था, जब मुझे शदीद प्यास महसूस हुई तो एक बादल ने मुझ पर साया किया और उस में से कुछ बारिश के क़तरे गिरे, जिन्हें मैं ने पी लिया, फिर मैं ने एक नूर देखा जिस से आस्मान का कनारा रोशन हो गया और एक शक़ल ज़ाहिर हुई जिस से मैं ने एक आवाज़ सुनी : ऐ अब्दुल क़ादिर ! मैं तेरा रब हूं और मैं ने तुम पर हराम चीज़ें हलाल कर दी हैं । तो मेरे वालिदे मोहतरम गौसुल आ'ज़म फ़रमाते हैं कि मैं ने اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़ कर कहा : “ऐ शैताने लईन ! दूर हो जा ।” तो रोशन कनारा अंधेरे में तब्दील हो गया और वोह शक़ल धूआं बन गई, फिर उस ने मुझ से कहा : ऐ अब्दुल क़ादिर ! इस से पहले मैं सत्तर औलिया को गुमराह कर चुका हूं मगर तुझे तेरे इल्म ने बचा लिया । मैं ने कहा : “येह सिर्फ़ मेरे रब्बे क़दीर का फ़ज़्लो एहसान है ।” शहज़ादए गौसे आ'ज़म शैख़ अबू नसर मूसा رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोहतरम गौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की खिदमत में अर्ज़ किया गया : आप ने किस तरह जाना कि वोह शैतान है ? आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने इर्शाद फ़रमाया : “उस की इस बात से कि बेशक मैं ने तेरे लिये हराम चीज़ें हलाल कर दीं ।” (مجموعه الاسرار، ص 228) हुआ
गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : येह खयाल करना कि शर्ई मुकल्लफ़ात (अहकामात) किसी हाल में साक़ित (या'नी मुआफ़) हो जाते हैं, ग़लत है । फ़र्ज़ इबादात का छोड़ना जिन्दीक़ियत (या'नी बे दीनी) है । हराम कामों का करना मा'सियत (या'नी गुनाह) है । फ़र्ज़ किसी हाल में साक़ित (या'नी मुआफ़) नहीं होता । (حَقَائِقُ عَنِ الصُّوفِ، ص 242)

ऐ अ़शिक़ाने ग़ौसे आ 'ज़म ! देखा आप ने कि नमाज़ रोज़ा फ़राइज़ किसी को भी मुआफ़ नहीं होते, जैसा कि कुछ नाम के पीर जो नमाज़ नहीं पढ़ते। जब उन के मुरीदीन से पूछा जाए तो कहते हैं कि हमारे पीर साहिब बग़दाद में फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ते हैं और फिर अजमेर में ज़ोहर की नमाज़ में होते हैं, मदीने में रोज़ाना इशा पढ़ते हैं तो इस तरह की बातों में नहीं आना चाहिये कि जब सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को भी नमाज़ मुआफ़ नहीं थी बल्कि हम पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ और हमारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर छे नमाज़ें फ़र्ज़, जी हां ! हमारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर तहज्जुद भी फ़र्ज़ थी, मज़ीद येह कि ग़ौसे पाक को शैतान ने धोका देने की कोशिश की लेकिन आप ने उस के वार को नाकाम बना दिया, उस ने दूसरा वार किया कि अब्दुल क़ादिर आप को आप के इल्म ने बचा लिया तो ग़ौसे पाक इस को भी समझ गए कि मेरे इल्म ने नहीं, मेरे रब ने मुझे बचा लिया। लिहाज़ा इस इल्म पर गुरूर नहीं करना चाहिये, हर हाल में रब्बे करीम की रहमत पर नज़र रखनी चाहिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ अ़शिक़ाने ग़ौसे आ 'ज़म ! येह भी मा'लूम हुवा कि शैतान बड़ा धोकेबाज़ है, वोह तरह तरह के जादूई करतब भी दिखाता है, उस के वार से हमेशा ख़बरदार रहना चाहिये, अपनी अक्लो होशियारी पर ए'तिमाद करने के बजाए अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम पर नज़र रखनी चाहिये। जिस के पास माल होता है उस के पास चोर आता है और जिस के पास दौलते ईमान है उस के पास ईमान का लुटेरा शैतान ज़रूर आता है नीज़ जिस

के पास ईमान जितना मज़बूत होगा उस के पास उसी क़दर नेकियों के ख़ज़ाने की भी कसरत होगी लिहाज़ा वहां शैतान बहुत ज़ियादा ज़ोर लगाएगा। हमारे पीरो मुर्शिद हुज़ूरे गौसे आ 'जम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पास ईमान व आ 'माल के ख़ज़ाने की कसरत देख कर शैतान ने डाका डालने की कई बार कोशिश की मगर اَلْحَمْدُ لِلَّهِ ! वोह नाकामो ना मुराद ही रहा।

बचा लो दुश्मनों के वार से या गौसे जीलानी बड़ी उम्मीद से तुम को पुकारा या शहे बग़दाद वसीला चार यारों का खुदा से बख़्शवा दीजे करम फ़रमाइये मुझ पर खुदारा या शहे बग़दाद अगर्चे लाख पापी है मगर अत्तार किस का है ? तुम्हारा है तुम्हारा है तुम्हारा या शहे बग़दाद

(वसाइले बख़्शिश, स. 544)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

एक जिन्न की तौबा

ऐ अशिक़ाने गौसे आ 'जम ! हमारे मुर्शिद गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की इबादत पर इस्तिक़ामत आप की बहुत बड़ी करामत थी। मशहूर मक़ूला है : اِلِسْتِغَامَةُ فَوْقَ الْكِرَامَةِ : या 'नी इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है।

ऐ अशिक़ाने गौसे आ 'जम ! हम जोश में आ कर कुछ काम करते हैं फिर ठन्डे हो जाते हैं, जिसे सोडा वोटर के जोश का नाम दिया जाता है। मेरे मुर्शिद गौसे पाक की इस्तिक़ामत की भी क्या शान है ! चुनान्चे शहन्शाहे बग़दाद, सरकारे गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक बार मैं जामेए मन्सूर में मसरूफ़े नमाज़ था कि सांप आ गया और उस ने मेरे सज्दे की जगह पर मुंह खोल दिया, मैं ने उसे हटा कर सज्दा किया मगर वोह मेरी गरदन से लिपटता हुवा मेरी एक आस्तीन में घुस कर दूसरी आस्तीन से निकला, जब मैं ने सलाम फेरा तो वोह गाइब हो गया। दूसरे दिन जब मैं

उसी मस्जिद में दाखिल हुवा तो मुझे एक बड़ी बड़ी आंखों वाला आदमी नज़र आया, मैं ने अन्दाज़ा लगा लिया कि येह शख्स इन्सान नहीं बल्कि कोई जिन्न है, वोह मुझ से कहने लगा कि मैं आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को तंग करने वाला वोही सांप हूं। मैं ने सांप की शक्त में बहुत सारे औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को आजमाया है मगर आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ जैसा किसी को भी साबित क़दम नहीं पाया। फिर उस जिन्न ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के मुबारक हाथ पर तौबा कर ली।

(مجموع الاسرار، ص 169 لخصاً)

हुए देख कर तुझ को काफ़िर मुसल्मां बने संगदिल मोम सां गौसे आ 'जम

(क़बालए बख़्शाश, स. 183)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

खुशूओ खुजूअ (या'नी नमाज़ में अल्लाह पाक के लिये आजिज़ी व इन्किसारी के साथ जिस्मानी और ज़ेहनी तवज्जोह) हो तो ऐसा कि नमाज़ में ख़्वाह सांप ही लिपट जाए मगर अल्लाह पाक की तरफ़ से तवज्जोह न हटे। आह! एक हमारी नमाज़ है कि अगर हम पर मख़्खी भी बैठ जाए तो परेशान हो जाएं, मा'मूली ख़ारिश भी हम से बरदाश्त न हो सके, इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि जिन्नात भी हमारे गौसुल आ'जम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के मुरीद बन जाते हैं।

शैख़ अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने कुल्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, पीरे लासानी, किन्दीले नूरानी, शैख़ मुहयुदीन, अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की चालीस साल तक खिदमत की, इस मुद्दत में आप इशा के वुजू से फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ते थे और आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का मा'मूल था कि जब बे वुजू होते थे तो उसी वक़्त वुजू फ़रमा कर दो रक्अत नमाज़ नफ़ल पढ़ लेते थे।

(مجموع الاسرار، ص 164)

तहिय्यतुल वुजू की फ़ज़ीलत

ऐ मेरे मुर्शिद गौसे पाक के दीवानो ! वुजू करने के बा'द अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रकअत नफ़ल अदा करने को “तहिय्यतुल वुजू” कहते हैं। “तहिय्यतुल वुजू” की बड़ी फ़ज़ीलत है और यह नेक बनने का सुख़ा बनाम “नेक आ'माल” में से एक नेक अमल भी है। सहीह मुस्लिम शरीफ़, हदीस नम्बर 553 में फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जो शख़्स अच्छे तरीक़े से वुजू करे और दो रकअतें क़ल्बी तवज्जोह (या'नी दिल की तवज्जोह) से अदा करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी। (मुस्लिम, स. 118, हदीस: 553) **हो करम ! हुस्ने अमल आह ! नहीं है कोई न वज़ाइफ़ हैं न अज़कार हैं गौसे आ 'ज़म हशर के रोज़ हमारी भी शफ़ाअत करना आह ! हम सख़्त गुनहगार हैं गौसे आ 'ज़म** (वसाइले बख़्शिश, स. 561)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب *** صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

गौसे पाक की शब बेदारी

ऐ अ़शिक़ाने गौसे आ 'ज़म ! मेरे मुर्शिद हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ बहुत ज़ियादा इबादतो रियाज़त और कुरआने करीम की तिलावत किया करते थे, चुनान्चे मन्कूल है कि शहन्शाहे बग़दाद हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ पन्दरह साल तक रात भर में एक कुरआने पाक ख़त्म करते रहे। (बिह्ये الاسरार, स. 118) आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ रोज़ाना एक हज़ार रकअत नफ़ल अदा फ़रमाते थे। (तफ़रिह الطّायر, स. 35) गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक रात जब मैं ने अपने मा'मूलात (या'नी इबादात) का इरादा किया तो नफ़्स ने सुस्ती करते हुए थोड़ी देर सो जाने और बा'द में उठ कर इबादात करने का मश्वरा दिया, जिस जगह दिल में यह ख़याल आया था उसी जगह और उसी वक़्त एक क़दम पर खड़े हो कर मैं ने एक कुरआने करीम ख़त्म किया। (बिह्ये القारिये)

नमाज़ में सुस्ती क्यों ?

ऐ अशिक़ाने गौसे आ 'जम ! हमारी सुस्ती के तो क्या कहने !

फ़ज़्र की अज़ान पर आंख खुल गई, घड़ी देखी, अभी तो जमाअत में थोड़ी देर है, फिर 15 मिनट के लिये सो जाते हैं। फिर उठे तो सूरज तुलूअ हो चुका और नमाज़ क़ज़ा हो गई, चलो क़ज़ा कर के पढ़ लेंगे, नमाज़ क़ज़ा होने का अफ़सोस भी नहीं होता, येह कितनी बड़ी मुसीबत है, थोड़ी सी मसरूफ़ियत होती है, चलो भई क़ज़ा पढ़ लेंगे। औरतें इस बला में ज़ियादा पड़ती हैं, शोपिंग सेन्टर जाएंगी, नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ लेंगी। येह भी वोह जो नमाज़ी हैं, जो नमाज़ नहीं पढ़तीं उन की तो बात ही अलग है। किसी की शादी या दा'वत में गए तो इस्लामी भाइयों की भी नमाज़ गई, जिन को ज़ब्बा होगा हो सकता है वोह भाग कर शायद मस्जिद में पढ़ लें, औरतें तो इस की भी परवा नहीं करतीं। ऐसा न करें ! आप दुन्या में कहीं भी हों, शोपिंग सेन्टर या बाज़ार, शर्ई पर्दे की रिआयत के साथ नमाज़ की पाबन्दी करनी है, बल्कि ऐसे अवक़ात में जाएं कि उस में नमाज़ का वक़्त न हो, अपना काम निमटा कर फ़ौरन घर आ जाएं और घर आ कर इत्मीनान से नमाज़ अदा करें और अगर आप के साथ कोई महरम है तो नमाज़ों के अवक़ात के इलावा उमूमन मस्जिद ख़ाली होती है, वहां पर्दे में वुजू वग़ैरा करवा कर नमाज़ पढ़ा दें। जब मेरे साथ सिक्कूरिटी के मुआमलात नहीं थे, तो किसी मस्जिद में, मैं ने खुद अपनी बच्ची, बच्चों की अम्मी को सफ़र वग़ैरा में नमाज़ पढ़ाई है, घर नहीं पहुंच सकते, चलो यहीं नमाज़ पढ़ लेते हैं। अगर ज़ब्बा होगा तो आप कर सकते हैं।

अफ़सोस ! हम नमाज़ के मुआमले में सन्जीदा (Serious) नहीं हैं। याद रखिये ! बहाना वोह बताएं जो क़ियामत में आप को बचा सके, वरना एक

दूसरे को हम मुत्मइन कर लेते हैं, रब को सब ख़बर है। जो नमाज़ नहीं पढ़ते उन को भी नमाज़ी बन जाना चाहिये, वरना मरने के बा'द बहुत पछताएंगे।

कर ले तौबा रब की रहमत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

वस्वसा और उस का जवाब

हो सकता है किसी के ज़ेहन में ये ख़याल आए कि बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِم इतनी ज़ियादा इबादत कैसे किया करते थे ! रोज़गार और फिर हज़ार हज़ार रकअतें पढ़ लेना, पहली बात तो ये कि इतनी रकअतें आम आदमी नहीं पढ़ सकता, ये उन की करामत है, जैसा कि मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा, शैरे खुदा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ जब घोड़े पर सुवार होने लगते तो एक रिकाब (या'नी पेडल) में मुबारक क़दम रखते फिर दूसरा क़दम रिकाब तक लाते तो इन चन्द सेकन्डों के वक़्फ़े में पूरा कुरआने करीम तिलावत कर लिया करते थे, ये आप की करामत थी। (شواهد النبوة، ص 212)

सोशल मीडिया की एक पोस्ट

नेक बन्दों के दिल महबबते इलाही और तक्वे से आबाद होते हैं, ये अपने दिलों से दुन्या की महबबत निकाल देते हैं, इन की रूहें ज़िक्रे इलाही के बिगैर बेचैनो बे क़रार रहती हैं, इस लिये वोह हर लम्हा यादे इलाही में मसरूफ़ रहते हैं और येह मक़ाम इबादतो रियाज़त में सख़्त मेहनत करने से हासिल होता है। सोशल मीडिया की एक पोस्ट (कुछ तब्दीली के साथ बयान करता हूं) जिस में किसी ने कुछ यूं चोट की थी : किसी ने दूसरे से सुवाल किया कि बुजुर्गाने दीन कैसे सारी सारी रात नमाज़ व कुरआन पढ़ते गुज़ार लेते थे ? तो सामने वाले ने जवाब दिया कि आज जिस तरह लोग सारी

सारी रात सोशल मीडिया पर Chatting या'नी बातचीत करने, वीडियोज़ देखने वगैरा में गुज़ार देते हैं और बारहा थकन व कोफ़्त का इज़हार भी नहीं होता, तो बुजुर्गाने दीन का चैनो क़रार यादे परवर्दगार में था जिस वजह से वोह अपने पाक परवर्दगार की याद में इस तरह मशगूल हो जाते कि सारी रात गुज़र जाने का पता न चलता और हम दुन्या की लज़्ज़तों में ऐसे बद मस्त हैं कि हमें दुन्यावी ख़्वाहिशात से होश ही नहीं आता ।

सारी सारी रात गुनाहों, गपशप, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़, नाचरंग की महफ़िलों में गुज़र जाए, ऐसा लगता है जैसे रात छोटी पड़ गई । जैसे ही नमाज़ पढ़ने की बारी आती है बिल्कुल जान पे आ जाती है, पानी बड़ा ठन्डा है ! नमाज़ कैसे पढ़ेंगे ! अभी थकन है, कल फ़ज़्र में दोनों इकट्ठी पढ़ लेंगे, येह हमारी क़ौम की हालत है । **अल्लाह** करीम गौसे पाक के सदके हम सब को पाबन्दी से सहीह नमाज़ पढ़ने की सअ़ादत बख़्शे । **अल्लाह** करे हम सब पक्के नमाज़ी बन जाएं, ऐसी आमीन कहें कि शैतान को भी झटका आ जाए, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हम पक्के बा जमाअ़त नमाज़ें पढ़ने वाले बनेंगे ।

गौसे पाक को शैतान ने इबादत में सुस्ती दिलाई तो आप ने सारी रात एक पाउं पर खड़े हो कर कुरआने करीम ख़त्म किया तो हम भी गौसे पाक के मुरीद हैं । दुन्या इधर की उधर हो जाए, बारिश हो, तूफ़ान हो, ज़लज़ले हों, ओले बरस रहे हों, हम नमाज़ नहीं छोड़ेंगे । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيم**

हर इबादत से बरतर इबादत नमाज़
क़ल्बे ग़मगीं का सामाने फ़रहत नमाज़
नारे दोज़ख़ से बेशक बचाएगी येह
भाइयो ! गर ख़ुदा की रिज़ा चाहिये

सारी दौलत से बढ़ कर है दौलत नमाज़
है मरीज़ों को पैग़ामे सिद्दहत नमाज़
रब से दिलवाएगी तुम को जन्नत नमाज़
आप पढ़ते रहें बा जमाअ़त नमाज़

होगी दुन्या ख़राब आख़िरत भी ख़राब
बे नमाज़ी जहन्नम का हक़दार है
सहसकोगे न दोज़ख़ का हरगिज़ अज़ाब
या ख़ुदा तुझ से अत्तार की है दुआ

भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़
मुस्तफ़ा की पढ़े प्यारी उम्मत नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

बहुत ज़ियादा इबादत

शहन्शाहे बग़दाद हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का पन्दरह साल तक येह हाल रहा कि इशा की नमाज़ के बा'द एक पाउं पर खड़े हो जाते और कुरआन शरीफ़ पढ़ते पढ़ते रात गुज़ार देते थे। (अخبار الانبياء، ص 11) अक्सर एक तिहाई रात में दो रकअत नफ़ल अदा करते, हर रकअत में सूरतुरहमान या सूरतुल मुज़्जिमिल की तिलावत करते, अगर “सूरतुल इख़्लास” पढ़ते तो उस की ता'दाद सो बार से कम न होती। (تفريح خاطر، ص 35)

नफ़ल रोज़ों की कसरत

ऐ आशिक़ाने गौसे आ'ज़म ! मेरे मुर्शिद हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ निहायत कसरत से रोज़े रखते थे।

तो गौसे पाक के तमाम मानने वाले येह अज़म करें कि रमज़ान का एक रोज़ा भी बिला उज़्रे शर्ई क़ज़ा नहीं होगा، إِنَّ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ، और مَعَادَ اللَّهِ जितने क़ज़ा हुए उन की सच्ची तौबा कीजिये और उन की क़ज़ा भी कर लीजिये, मेरे मुर्शिद गौसे पाक बा'ज़ अवकात दरख़्तों के पत्तों, जंगली बूटियों वगैरा से रोज़ा इफ़तार फ़रमाते। गरज़ काइमुल्लैल और साइमुन्नहार (या'नी रात को जागना और दिन को रोज़े रखना) आप की आदत बन चुकी थी।

शैख़ अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अबिल फ़तह हरवी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर गौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की ख़िदमत में चन्द रातें

गुजारीं, आप का येह हाल था कि रात के अक्वल हिस्से में कुछ देर नमाज़ पढ़ते फिर ज़िक्र करते रहते यहां तक कि रात का पहला तिहाई (one-third) हिस्सा गुज़र जाता और येह ज़िक्र करते “الْحَيِّطُ الرَّبُّ السَّمِيدُ الْحَسِيبُ الْفَعَالُ” मैं ने देखा कि कभी आप का जिस्म कमज़ोर हो जाता और कभी फ़र्बा, कभी हवा में बुलन्द होते और मेरी नज़रों से गाइब हो जाते फिर (थोड़ी देर बा'द आ जाते और) नमाज़ में खड़े हो कर कुरआने करीम पढ़ते रहते यहां तक कि रात का दूसरा तिहाई हिस्सा गुज़र जाता। आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ सज़्दे बहुत तवील करते, अपने चेहरे को ज़मीन से लगाते। फिर तुलूए फ़त्र तक मुराक़बा व मुशाहदे में बैठे रहते फिर निहायत इज्जो इन्किसार और खुशूअ से दुआ मांगते, उस वक़्त आप को ऐसा नूर ढांप लेता कि नज़रों से गाइब हो जाते यहां तक कि नमाज़े फ़त्र के लिये दौलत कदे से बाहर निकलते।

(تجويد الاسرار، ص 164)

गौसे पाक का ख़ौफ़े खुदा

ऐ अशिक़ाने गौसे आ 'जम ! अल्लाह वालों का हमेशा से येह तरीक़ा रहा है कि ढेरों नेकियां करने और गुनाहों से बचने के बा वुजूद वोह बे पनाह ख़ौफ़े खुदा रखते थे। हमारे आक़ा, हमारे मुर्शिद गौसे पाक भी बे पनाह ख़ौफ़े खुदा रखते थे, चुनान्चे हज़रते शरफुद्दीन सा'दी शीराज़ी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को हरमे का'बा में देखा गया कि कंकरियों पर सर रखे बारगाहे रब्बुल इज्ज़त में अर्ज़ गुज़ार हैं : “ऐ रब्बे करीम ! मुझे बख़्शा दे और अगर मैं सज़ा का हक़दार हूं तो बरोजे क़ियामत मुझे अन्धा उठाना ताकि नेकोकार लोगों के सामने शरमिन्दा न होना पड़े।”

(गुलिस्ताने सा'दी, स. 54)

गौसे पाक की ईद

हुजूर गौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ औलिया के सरदार हैं लेकिन खौफ़े खुदा का जो अलम था इस का अन्दाज़ा आप की तरफ़ मन्सूब इन अशआर से लगाया जा सकता है कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने ईद के दिन फ़रमाया (उन अशआर का तरजमा) : “लोग कह रहे हैं : “कल ईद है ! कल ईद है !” और सब खुश हैं । लेकिन मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया, मेरे लिये तो वोही दिन ईद होगा ।” (फैज़ाने रमज़ान, स. 309)

है अत्तार को सल्वे ईमां का धड़का बचा इस का ईमां बचा गौसे आ'ज़म
हो अत्तार की बे सबब बख़्शिश आका येह फ़रमाएं हक़ से दुआ गौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 551, 554)

ऐ अशिक़ाने गौसे आ'ज़म ! हम गौसे पाक के कैसे अशिक़ हैं कि हमारे पीरो मुर्शिद तो पीराने पीर, वलियों के अमीर हो कर भी इतनी इतनी इबादतें करें और एक हम हैं कि हम से फ़र्ज नमाज़ भी न पढ़ी जाए और पढ़ें भी तो बिला इजाज़ते शर्ई जमाअत के बिगैर । याद रखिये ! मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जो (एक) नमाज़ क़ज़ा करता है तो वोह हज़ारों साल जहन्नम के अज़ाब का हक़दार है । (फ़तावा रज़विय्या, 9/158) और येह भी याद रखिये कि जान बूझ कर बिला इजाज़ते शर्ई जमाअत छोड़ना भी सख़्त गुनाह है । महब्बत करने वाला अपने महबूब के नक़्शे क़दम पर चलता (या'नी उस को Follow करता) है । लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि महब्बते गौसे आ'ज़म का दम भरने के साथ साथ नमाज़ों की पाबन्दी करें, फ़र्ज रोज़े रखें, हमेशा हर हाल में सच बोलें और अपने पाक परवर्दगार से डरते रहें । काश काश काश !!!

गुनाहों ने मुझ को कहीं का न छोड़ा न हो जाऊं बरबाद या गौसे आ 'ज़म
मुझे नफ़से ज़ालिम पे कर दीजे ग़ालिब हो नाकाम हमज़ाद या गौसे आ 'ज़म
मेरे क़ल्ब से हुब्बे दुन्या की मुर्शिद उखड़ जाए बुन्याद या गौसे आ 'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 555, 556)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

दीदारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हज़रते शैख़ अब्दुल कादिरी जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने एक मरतबा मिम्बर पर खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : मुझ पर एक मरतबा मंगल के दिन जोहर से पहले रसूले पाक صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने करम फ़रमाया, अपनी ज़ियारत से नवाज़ा और इर्शाद फ़रमाया : “बेटा ! बयान क्यूं नहीं करते ?” मैं ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे नानाजान صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं अज़मी (ग़ैरे अरबी) हूं, फुसहाए बग़दाद (बग़दाद के बड़े बड़े फ़सीह या'नी साफ़ ज़बान बोलने वालों) के सामने कैसे बयान करूं ?” तो प्यारे आका صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “बेटा ! मुंह खोलो ।” मैं ने अपना मुंह खोला तो आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरे मुंह में सात मरतबा लुआबे दहन (थूक मुबारक) डाल कर इर्शाद फ़रमाया : “लोगों के सामने बयान किया करो और उन्हें अच्छी अच्छी हिक्मतों और नसीहतों के ज़रीए राहे खुदा की तरफ़ बुलाया करो ।” फिर मैं ने नमाज़े जोहर अदा की और बैठ गया, मेरे पास बहुत से लोग जम्अ हो गए, मुझ पर एक अज़ीब सा ख़ौफ़ तारी था कि अचानक मैं ने विज्दानी कैफ़ियत में देखा कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रत अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ मेरे सामने तशरीफ़ फ़रमा हैं और फ़रमा रहे हैं कि “ऐ बेटे ! बयान क्यूं नहीं

कर रहे ?” मैं ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे वालिद ! मुझ पर ख़ौफ़ सा तारी है ।” तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! अपना मुंह खोलो ।” मैं ने मुंह खोला तो आप رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ने मेरे मुंह में छे मरतबा लुआब (थूक मुबारक) डाला । मैं ने अर्ज़ की : “आप ने सात बार क्यों नहीं डाला ?” तो फ़रमाने लगे : “**رَسُولُ اللَّهِ** صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अदब की वजह से (या'नी उन्होंने ने सात बार डाला तो इस लिये मैं ने एक बार कम छे बार डाला) ।” फिर वोह मेरी निगाहों से ग़ाइब हो गए और मैं ने बयान शुरूअ कर दिया । (بجهد الاسرار، ص 58)

उलूमो फ़ुयूजे शहन्शाहे तयबा हैं सीने में तेरे निहां गौसे आ 'ज़म

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

गौसे पाक की नेकी की दा'वत

शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने नेकी की दा'वत अ़ाम करने का आगाज़ माहे शव्वालुल मुकर्रम 521 हि. में बग़दादे मुअल्ला के मशरिक (या'नी East) में मौजूद हल्बा नामी महल्ले में होने वाले एक अज़ीमुश्शान इज्तिमाअ में बयान से किया । उस अज़ीमुश्शान इज्तिमाअ में हैबतो रौनक़ छाई हुई थी, औलियाए किराम और फ़िरिशतों ने उसे ढांपा हुवा था, आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने किताबो सुन्नत की वज़ाहत के साथ लोगों को अल्लाह पाक की तरफ़ बुलाया तो लोग इताअतो फ़रमां बरदारी के लिये जल्दी करने लगे । (بجهد الاسرار، ص 174) शहज़ादए गौसे आ 'ज़म हज़रते अब्दुल वहहाब رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “वालिदे मोहतरम हुज़ूर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी गौसे आ 'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने 521 हि. से 561 हि. तक चालीस साल मख़्लूक को वा 'ज़ो नसीहत फ़रमाई ।” (بجهد الاسرار، ص 184)

आवाज़े मुबारक सब को बराबर सुनाई देती

शहन्शाहे बग़दाद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की मजलिसे मुबारक में बा वुजूद यह कि शुरकाए इज्तिमाअ बहुत ज़ियादा होते थे लेकिन आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की आवाज़े मुबारक जैसी नज़्दीक वालों को सुनाई देती थी वैसी ही दूर वालों को भी सुनाई देती थी या'नी दूर और नज़्दीक वालों के लिये आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की आवाज़े मुबारक यक्सां (या'नी एक जैसी) थी। (مجموع الاسرار، ص 181)

हज़रते इब्राहीम बिन सईद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जब हमारे शैख़ हुज़ूरे गौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ अलिमों वाला लिबास पहन कर ऊंचे मक़ाम पर खड़े हो कर बयान फ़रमाते तो लोग आप के कलामे मुबारक को बग़ौर सुनते और उस पर अमल करते। (مجموع الاسرار، ص 189 طبعاً)

ऐ अशिक़ाने गौसे आ'ज़म ! कुरबान जाइये मेरे मुश़िद गौसे पाक की मुबारक आवाज़ पर ! आप की येह जीती जागती करामत थी कि जैसी पहले आदमी को आवाज़ आ रही है हज़ारवें, दस हज़ारवें आदमी को भी वैसी ही आवाज़ आती थी और سُبْحَانَ اللَّهِ ! आप का सत्तर सत्तर हज़ार अफ़राद का इज्तिमाअ होता था, हमारी आवाज़ लाउड स्पीकर के ज़रीए भी दूर पहुंचाने के लिये प्रोब्लेम होती है, कभी साउन्ड एक दम तेज हो जाता है कभी मध्धम।

70 हज़ार का इज्तिमाअ

मेरे मुश़िद, शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि शुरूअ शुरूअ में सोते जागते मुज़्ज पर बस أَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَ نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ (या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ करने) की धुन सुवार रहती और मैं तब्लीगे कुरआनो सुन्नत के लिये इस क़दर बे क़रार रहता कि खुद

पर भी इख्तियार न रहता और मेरे पास दो तीन आदमी भी होते तो मैं उन्हें ही कुरआनो सुन्नत की बातें सुनाने लगता फिर मेरे पास लोगों का इतना कसीर हुजूम होने लगा कि मजलिस में जगह बाकी न रही। चुनान्चे मैं ईदगाह चला गया और वहां वा'जो नसीहत करने लगा, वहां भी जगह तंग हो गई तो लोग मेरा मिम्बर शहर के बाहर ले गए और बे शुमार मख्लूक सुवार और पैदल हो कर आती और इज्तिमाअ के बाहर ईर्द गिर्द खड़ी हो कर वा'ज सुनती हत्ता कि सुनने वालों की ता'दाद सत्तर हजार (70000) के करीब पहुंच गई।

(بجوه الاسرار، ص 177 طصاً)

वा'जों की तेरे मुर्शिद है धूम चार जानिब
जल्वा दिखाना मुर्शिद कलिमा पढ़ाना मुर्शिद
उफ़ताद आ पड़ी है इमदाद की घड़ी है
साइल नवाजिशों का कहता था साजिशों का
अत्तार को बुला कर मुर्शिद गले लगा कर
बगदाद के मुसाफिर मेरा सलाम कहना

मैं भी कभी तो सुन लूं मीठा कलाम कहना
जिस दम हो ज़िन्दगी का लबरेज जाम कहना
फरियाद कर रहा है तेरा गुलाम कहना
मुर्शिद हो दुश्मनों का किस्सा तमाम कहना
फिर खूब मुस्करा कर करना कलाम कहना
रो रो के मुर्शिदी से मेरा पयाम कहना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

बयाने गौसे पाक में औलियाए किराम की हाजिरी

मन्कूल है कि गौसे आ'जम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ जब वा'ज के लिये मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो आप जूही اَلْحَمْدُ لِلَّهِ कहते तो रूए ज़मीन में जिस क़दर औलियाए किराम थे ख़्वाह वोह इज्तिमाअ में मौजूद होते या न होते सब ख़ामोश हो जाते, येही वजह है कि आप एक बार اَلْحَمْدُ لِلَّهِ कहने के बा'द थोड़ी देर ठहरते और फिर बयान का आगाज़ फ़रमाते और इतनी देर में

इज्तिमाअ में इस क़दर हुजूम हो जाता कि जिस क़दर लोग नज़र आ रहे होते उस से कहीं ज़ियादा सुनने वाले और हाज़िरीन ऐसे होते जो ज़ाहिरी आंख से नज़र न आते थे। (اخبار الانبياء، ص 12) आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ शुरकाए इज्तिमाअ के दिलों के मुताबिक़ बयान फ़रमाते और कश्फ़ के साथ उन की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते, जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ मिम्बर पर खड़े होते तो आप के जलाल की वजह से लोग भी खड़े हो जाते थे और जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ उन से ख़ामोश होने का फ़रमाते तो सब ऐसे ख़ामोश हो जाते कि आप की हैबत की वजह से उन की सांसों के इलावा कुछ भी सुनाई न देता। (تفسير الاسرار، ص 181)

वाह क्या मर्तबा ऐ गौसे है बाला तेरा ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ 'ला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा
क्या दबे जिस पे हिमायत को हो पन्जा तेरा शेर को ख़तरे में लाता नहीं कुत्ता तेरा
गरज़ आका से करूं अर्ज कि तेरी है पनाह बन्दा मजबूर है ख़ातिर पे है कब्ज़ा तेरा
हुक्म नाफ़िज़ है तेरा ख़ामा तेरा सैफ़ तेरी दम में जो चाहे करे दौर है शाहा तेरा
फ़रबे आका में रजा और भी इक नज़्मे रफ़ीअ चल लिखा लाएं सना ख़ानों में चेहरा तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की आमद

हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :
शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की मजलिस शरीफ़ में तमाम
औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ जिस्मानी हयात और अरवाह के साथ (या'नी
अपनी रूहों के साथ) नीज़ जिन्न और मलाएका (या'नी फ़िरिश्ते) तशरीफ़
फ़रमा होते थे और (कई बार तो) रसूले पाक صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी तरबियतो

हिमायत फ़रमाने के लिये तशरीफ़ फ़रमा होते थे, हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام अक्सर अवकात मजलिस शरीफ़ में तशरीफ़ फ़रमा होते थे और न सिर्फ़ खुद तशरीफ़ लाते बल्कि उस दौर के जिस भी बुजुर्ग से आप عَلَيْهِ السَّلَام की मुलाकात होती तो उन को भी मुर्शिदी गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की मजलिस में हाज़िर होने की ताकीद फ़रमाते कि “जिस को भी काम्याबी की ख़्वाहिश हो उस को गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की मजलिस शरीफ़ की हमेशा हाज़िरी ज़रूरी है।” (اخبار الانبياء، ص 13)

जिसे शक हो वोह ख़िज़्र से पूछ देखे तेरी मजलिसों का समां गौसे आ 'जम

ख़्वाब का मन्ज़र बेदारी में

मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ एक दिन बयान फ़रमा रहे थे और आप के मुरीदे ख़ास और पहले ख़लीफ़ा शैख़ अली बिन हैती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ आप के करीब बैठे हुए थे कि उन को नींद आ गई तो मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने अहले मजलिस से फ़रमाया : ख़ामोश रहो। और आप मिम्बर से नीचे उतर आए और शैख़ अली बिन हैती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के सामने बा अदब खड़े हो गए और उन की तरफ़ देखते रहे। जब शैख़ अली बिन हैती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ख़्वाब से बेदार हुए तो हज़रत गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने उन से इर्शाद फ़रमाया कि आप ने ख़्वाब में अल्लाह पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखा है? उन्होंने ने जवाब दिया : जी हां। आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : मैं इसी लिये तो बा अदब खड़ा हो गया था। फिर आप ने पूछा कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप को क्या

नसीहत फ़रमाई ? तो उन्होंने ने अर्ज की : आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि “शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की ख़िदमत में हाज़िरी को लाज़िम कर लो ।” इस के बा'द लोगों ने शैख़ अली बिन हैती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से पूछा कि हुज़ूर गौसे आ'जम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के इस फ़रमान का क्या मतलब था कि मैं इसी लिये बा अदब खड़ा हो गया था तो वलिय्ये कामिल शैख़ अली बिन हैती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “मैं जो कुछ ख़्वाब में देख रहा था, गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ उस को जागती आंखों से बेदारी में देख रहे थे ।”

(تجويد الاسرار، ص 58)

كَرَّمَكَ اللَّهُ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ का है साया तुझ पर बोलबाला है तेरा ज़िक्र है ऊंचा तेरा

बयाने गौसे आ 'जम में जिन्नात की शिर्कत

हज़रते शैख़ अबू ज़करिय्या यहूया बिन अबी नसर सहरावी के वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने एक दफ़्आ अमल के ज़रीए जिन्नात को बुलाया तो उन्होंने ने कुछ ज़ियादा देर कर दी, फिर वोह मेरे पास आए और कहने लगे कि “जब शैख़ सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ बयान फ़रमा रहे हों तो उस वक़्त हमें बुलाने की कोशिश मत किया करो ।” मैं ने कहा : वोह क्यूं ? जिन्नात ने कहा कि हम हुज़ूर गौसे आ'जम रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की मजलिस में हाज़िर होते हैं । मैं ने कहा : तुम भी उन की मजलिस में जाते हो ? उन्होंने ने कहा : हां ! हम मर्दों में कसीर ता'दाद में होते हैं, हमारे बहुत से गुरौह हैं जिन्हों ने इस्लाम क़बूल किया है और इन सब ने हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के हाथ पर तौबा की है । (تجويد الاسرار، ص 180)

13 इलूम में बयान

हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल वहहाब शा'रानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ लिखते हैं :
हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ तेरह इलूम में तक़्ीर
फ़रमाया करते थे । और हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के मद्रसे में लोग आप
رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से तफ़्सीर, हदीस, फ़िक्ह और इल्मुल कलाम पढ़ते थे, दोपहर
से पहले और बा'द दोनों वक़्त लोगों को तफ़्सीर, हदीस, फ़िक्ह, कलाम,
उसूल और नह्व पढ़ाते थे और ज़ोहर के बा'द क़िराअतों के साथ कुरआने
करीम की ता'लीम देते थे । (الطّیقات الکبریٰ للشّرانی، 1/179- بحیوٰة الاسرار، ص 225)

मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ एक हफ़्ते
में तीन बार बयान फ़रमाते थे, मद्रसे में जुमुअ़ा की सुब्ह को, मंगल की शाम
को और सराए में इतवार की सुब्ह को । (قلائد الجواهر، ص 18)

आप की मजलिस में 400 ज़बर दस्त अ़ालिम आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की
तक़्ीर लिखा करते थे और बसा अवक़ात मजलिस की हालत में आप
رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हवा पर चन्द क़दम उड़ कर फिर कुरसी पर आ कर तशरीफ़
फ़रमा हो जाया करते थे । आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मेरा जी चाहता है कि
जिस तरह मैं पहले था अब भी जंगलों में रहूँ कि न मैं लोगों को देखूँ न वोह
मुझे देखें । फिर फ़रमाया कि अल्लाह पाक ने मुझ से येह चाहा कि लोगों
को फ़ाएदा पहुंचे क्यूँ कि मेरे हाथ पर यहूदो नसारा में से पांच सो से ज़ियादा
मुसल्मान हुए हैं और मेरे हाथ पर एक लाख से ज़ाइद बे अ़मल ताइब हुए
(या'नी तौबा की) और येह बड़ी नेकी है । (بحیوٰة الاسرار، ص 184 ملقطاً)

बयां सुन के तौबा गुनहगार कर लें ज़बां में वोह दे दो असर गौसे आ 'जम

गैर मुस्लिमों का क़बूले इस्लाम

एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की खिदमतते सरापा अज़मत में 13 गैर मुस्लिम आए और आप के हाथ पर मजलिसे वा'ज में मुसल्मान हुए फिर कहने लगे कि हम मग़रिब (या'नी West) के अलाके के नसारा हैं। हम ने इस्लाम का इरादा किया लेकिन हमें तरद्दुद (शक) था कि कहां जा कर इस्लाम लाएं, कुछ फ़ैसला नहीं कर पाते थे। तब हम ने ग़ैब से आवाज़ सुनी कि "ऐ काम्याब गुरौह ! तुम बग़दाद जाओ और शैख़ अब्दुल क़ादिर के हाथ पर मुसल्मान हो जाओ क्यूं कि उन की बरकत से तुम्हारे दिलों में वोह ईमान दिया जाएगा कि जो और जगह हासिल न होगा।"

(مجموع الاسرار، ص 185)

क़ल्बे मुर्दा को भी ठोकर से जिला दो मुर्शिद

बिल यकीं तुम ने तो मुर्दों को जिलाया या गौस

इमामुन्नह्व बना दिया

इमाम अबू मुहम्मद बिन ख़शशाब नह्वी कहते हैं : मैं जवानी की हालत में इल्मे नह्व (अरबी ग्रामर) पढ़ा करता था। मैं लोगों से हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के दिल नशीन बयान की ख़ूबियां सुना करता था। मैं इरादा करता था कि मैं आप का बयान सुनूं मगर मेरे पास वक़्त नहीं होता था। एक दिन मैं ने पक्का इरादा कर लिया और हुज़ूर गौसे पाक रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के इज्तिमाअ में हाज़िर हो गया, जब आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने बयान शुरू किया तो मेरे दिल को आप का कलाम सुन कर मज़ा न आया और न ही मैं कलाम

समझ पाया। मैं ने अपने दिल में कहा : मेरा आज का दिन जाएँ हो गया। उसी वक्त हुजूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हो कर इर्शाद फ़रमाया : तेरे लिये हलाकत हो, तू जि़क्र की मजलिस पर इल्मे नह्व (अरबी ग्रामर) को फ़ज़ीलत देता है और इस को इख़्तियार करता है ? हमारी सोहबत इख़्तियार कर, हम तुझे (अरबी ग्रामर के मशहूर इमाम) सीबवैह बना देंगे। यह सुन कर अब्दुल्लाह ख़शशाब नह्वी गौसे पाक की सोहबत में रहने लगे जिस का नतीजा यह ज़ाहिर हुवा कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ नह्व के साथ कई उलूम में माहिर (Expert) हो गए। (267/39-32-تاريخ الاسلام للذّهبي، ص 32)

सुल्ताने विलायत गौसे पाक वलियों पे हुकूमत गौसे पाक
 शहबाजे ख़िताबत गौसे पाक फ़ानूसे हिदायत गौसे पाक
 अल्लाह की रहमत गौसे पाक हैं बाइसे बरकत गौसे पाक

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक़तबतुल मदीना के शाएँ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़्लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ्ते का रिसाला

